

MJC- 9 , UNIT -1

भारत में मुगल साम्राज्य के पतन के लिए जिम्मेदार कारण क्या थे? चर्चा कीजिए ?

महान मुगलों का काल, जो 1526 में बाबर के सिंहासनारूढ़ होने के साथ शुरू हुआ, 1707 में औरंगज़ेब की मृत्यु के साथ समाप्त होता हुआ प्रतीत होने लगा। औरंगज़ेब की मृत्यु ने भारतीय इतिहास के एक युग का अंत कर दिया। जब औरंगज़ेब की मृत्यु हुई, तब मुगल साम्राज्य भारत में सबसे बड़ा था। फिर भी, उसकी मृत्यु के लगभग पचास वर्षों के भीतर ही मुगल साम्राज्य बिखर गया।

भारत में मुगल साम्राज्य के पतन के लिए जिम्मेदार निम्न कारण हैं:

1 उत्तराधिकार के युद्ध:

मुगलों ने ज्येष्ठाधिकार कानून जैसे उत्तराधिकार के किसी कानून का पालन नहीं किया। परिणामस्वरूप, जब भी कोई शासक मरता, तो सिंहासन के लिए भाइयों के बीच उत्तराधिकार का युद्ध शुरू हो जाता। इससे मुगल साम्राज्य कमजोर हो गया, विशेषकर औरंगजेब के बाद। कुलीन वर्ग ने एक या दूसरे प्रतिद्वंद्वी का साथ देकर अपनी शक्ति बढ़ा ली।

2. औरंगजेब की नीतियाँ:

औरंगजेब यह समझने में असफल रहा कि विशाल मुगल साम्राज्य जनता के स्वैच्छिक समर्थन पर निर्भर था, औरंगजेब की धार्मिक रूढ़िवादिता और हिंदुओं के प्रति उसकी नीति ने मुगल साम्राज्य की स्थिरता को नुकसान पहुंचाया। उन्होंने राजपूतों का समर्थन खो दिया, जिन्होंने साम्राज्य की मजबूती में बहुत योगदान दिया था। उन्होंने सहायता के स्तंभ के रूप में कार्य किया था, लेकिन औरंगजेब की नीति ने उन्हें कट्टर शत्रु बना दिया। सिखों, मराठों, जाटों और राजपूतों के साथ युद्धों ने मुगल साम्राज्य के संसाधनों को खत्म कर दिया था।

3. औरंगजेब के कमजोर उत्तराधिकारी:

औरंगजेब के उत्तराधिकारी कमजोर थे और गुटबाजी से ग्रस्त सरदारों की साजिशों और षड्यंत्रों का शिकार बन गये। वे अकुशल सेनापति थे और विद्रोहों को दबाने में असमर्थ थे। एक मजबूत शासक, एक कुशल नौकरशाही और एक सक्षम सेना की अनुपस्थिति ने मुगल साम्राज्य को कमजोर बना दिया था। बहादुर शाह के शासनकाल के बाद कमजोर, निकम्मे और विलासिताप्रिय राजाओं की एक लंबी सूची आई।

4. खाली खजाना:

शाहजहाँ के निर्माण कार्य के उत्साह के कारण खजाना खाली हो गया था। दक्षिण में औरंगजेब के लम्बे युद्धों ने राजकोष को और अधिक खाली कर दिया था।

5. आक्रमण:

विदेशी आक्रमणों ने मुगलों की शेष शक्ति को नष्ट कर दिया तथा विघटन की प्रक्रिया को तेज कर दिया। नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों के परिणामस्वरूप धन की और अधिक निकासी हुई। इन आक्रमणों ने साम्राज्य की स्थिरता को हिलाकर रख दिया।

6. साम्राज्य का आकार और क्षेत्रीय शक्तियों से चुनौती:

मुगल साम्राज्य इतना बड़ा हो गया था कि उसे किसी एक केंद्र अर्थात् दिल्ली से नियंत्रित करना संभव नहीं था। महान मुगल कुशल थे और मंत्रियों और सेना पर नियंत्रण रखते थे, लेकिन बाद के मुगल खराब प्रशासक थे।

परिणामस्वरूप, सुदूर प्रांत स्वतंत्र हो गए। स्वतंत्र राज्यों के उदय से मुगल साम्राज्य का विघटन हुआ।

7. 18वीं शताब्दी में स्वतंत्र राज्यों का उदय:

मुगल साम्राज्य के पतन के साथ कई प्रांत साम्राज्य से अलग हो गए और कई निम्न स्वतंत्र राज्य अस्तित्व में आये।

A. हैदराबाद:

हैदराबाद राज्य की स्थापना कमरुद्दीन सिद्दीकी ने की थी, जिन्होंने 1712 में सम्राट फर्रुखसियर द्वारा निजाम-उल-मुल्क की उपाधि के साथ दक्कन का वायसराय नियुक्त किया गया था। उन्होंने वस्तुतः एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की लेकिन सम्राट मोहम्मद शाह के शासनकाल के दौरान दिल्ली लौट आये। 1724 में उन्हें आसफ जाह की उपाधि के साथ पुनः दक्कन का वायसराय नियुक्त किया गया।

B. बंगाल:

18वीं शताब्दी में बंगाल में बंगाल, बिहार और उड़ीसा शामिल थे। मुर्शिद कुली खान औरंगजेब के अधीन बंगाल का दीवान था। फर्रुखसियर ने उन्हें 1717 में बंगाल का सूबेदार (गवर्नर) नियुक्त किया।

C. अवध:

अवध सूबा में बनारस और इलाहाबाद के पास के कुछ जिले शामिल थे। सआदत खान बुरहान-उल-मुल्क को मुगल सम्राट द्वारा अवध का राज्यपाल नियुक्त किया गया था, लेकिन वह जल्द ही स्वतंत्र हो गया।

8. भूमि संबंधों में गिरावट:-

शाहजहाँ और औरंगजेब ने राज्य के खजाने से अधिकारियों को सीधे भुगतान करने के बजाय जागीर और पैबकी का विकल्प चुना। जागीर से तात्पर्य अधिकारियों को उनकी सेवाओं के लिए भूमि के अस्थायी आवंटन से है, जो सम्राट की संतुष्टि के अनुसार हो सकता है। पैबाकी का तात्पर्य आरक्षित भूमि से प्राप्त राजस्व से है जो केन्द्रीय खजाने में भेजा जाता था। सामंतों और ज़मींदारों के बीच हितों का निरंतर टकराव होता रहता था।

9. मराठों का उदय:-

मराठों ने पश्चिमी भारत में अपनी स्थिति मजबूत कर ली, उन्होंने एक बड़े महाराष्ट्र साम्राज्य की योजना बनानी शुरू कर दी। मुगल साम्राज्य का पतन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और संस्थागत कारणों से हुआ। 1813 तक, ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इंडिया कंपनी के एकाधिकार को नियंत्रित करने वाली शक्तियाँ छीन लीं और बाद में, कंपनी सरकार की ओर से काम करने लगी। 1857 में, भारतीय विद्रोह हुआ, जिसके कारण ब्रिटिश औपनिवेशिक कार्यालय ने अंतिम सम्राट बहादुर शाह द्वितीय को निर्वासित कर दिया और भारतीय उपमहाद्वीप पर पूर्ण नियंत्रण कर लिया।
